चन्द्रमा शांति पूजा विधान

नवग्रह महिमा– गर्भकालसे ही जीव नवग्रहोंके प्रभाव में आ जाता है और आजीवन ग्रहोंके प्रभावमें ही रहता है। यश–अपमान, आरोग्यता–बीमारी, धन–निर्धनता, पाप–पुण्य, सुख–दुख–मोक्ष आदि सभी शुभ–अशुभ अवस्थाओंके कारक वास्तवमें नवग्रह ही होते हैं। जो हमारे पूर्वजन्मोंके कर्मोंके

GURUDEV RAJ VERMA
9897507933
7500292413

अनुसार हमें शुभ–अशुभ फल देते हैं। अभिमानी ग्रह पूजित हुए बिना शांत नहीं होते। अतः इनको पूजन एवं आदरसे संतुष्ट करना चाहिये।

ब्रह्माजी पिप्लाद मुनिसे कहते हैं– ग्रहोंकी पीड़ासे छुटकारा पानेके लिये नैवेद्य निवेदन, हवन, नमस्कार आदि करना चाहिये। ग्रहोंका अनादर नहीं करना चाहिये। पूजित होने पर ये शांति प्रदान करते हैं।

बृहस्पति संहिता में बृहस्पतिजी ग्रहों की महिमा में कहते हैं– कि यह सम्पूर्ण संसार ग्रहों के अधीन है, सभी श्रेष्ठजन भी ग्रहों के अधीन होते हैं, कालतत्त्व का ज्ञान भी ग्रहों के अधीन ही है और ग्रह ही कर्मों का फल देने वाले होते हैं। सृष्टि, पालन और संहार– यह सब ग्रहों के अधीन है, कर्मों के फलदाता ग्रह ही हैं और कर्मफलों के सूचक भी ग्रह ही होते हैं, अशुभ संयोग भी ग्रहों के अनुसार ही प्राप्त होता है और उन अशुभ संयोगों को दूर करने में ग्रह ही सहायक होते हैं। अतः उन ग्रहों की उपासना द्वारा उन्हें प्रसन्न करना चाहिये।

श्रीकृष्ण युद्धिष्ठर से ग्रहोंकी महिमाके विषयमें में कहते हैं– जो मनुष्य विधिवत ग्रहोंकी पूजा करता है, वह इस लोकमें सभी कामनाओंको प्राप्त कर लेता है तथा अंतमें स्वर्गलोकमें प्रतिष्ठित होता है। यदि किसी निर्धन मनुष्य को कोई ग्रह नित्य पीड़ा पहुंचा रहा हो तो उस बुद्धिमान् को चाहिये कि उस ग्रह की यत्नपूर्वक भली भांति पूजा करे। क्योंकि ग्रह, गौ, राजा, ब्राह्मण

और गुरु– ये विशेषरूपसे पूजित होने पर रक्षा करते हैं, अन्यथा अवेहलना किये जाने पर जलाकर भस्म कर देते हैं।

चन्द्रमा परिचय– नवग्रहोंमें चन्द्रमा सर्वाधिक चंचल और तीव्र गति वाले हैं। अतः इन्हें कालपुरूषका मन माना गया है, क्योंकि मन ही सर्वाधिक चंचल होता है। यह वनस्पतियोंके राजा, नक्षत्रों व तारोंके स्वामी तथा लक्ष्मीजी के भाई कहे जाते हैं। क्योंकि समुद्र मंथनसे ही लक्ष्मी तथा चन्द्रमाकी उत्पत्ति मानी गयी है। पुराणोंमें कई स्थानों पर चन्द्रमाको अत्रि ऋषि एवं अनुसूया का पुत्र भी कहा गया है। चन्द्रमा शिवजीके मस्तक पर सुशोभित हैं। समुद्र मंथनसे उत्पन्न कालकूट विषको शिवजीने ग्रहण किया था। विषकी उग्रता को शांत करने के लिये शिवजीने मस्तक पर शीतल चन्द्रमाको धारण किया था। सूर्य एवं बुध चन्द्रमाके मित्रग्रह, शेष सभी ग्रह सम हैं, राहुके अतिरिक्त। अतः चन्द्रमाको अजातशत्रु (जिसका कोई शत्रु न हो) भी कहा जाता है। चन्द्रमा दयालु, सौम्य, चंचल, किंतु कामी ग्रह माने गये हैं। चन्द्रमा का रत्न मोती और धातु चांदी है। जिसको कनिष्ठिका या तर्जनी में धारण करते हैं।

जातककी माता, सास, सौंदर्य, रूप, मन, बुद्धि, दूध, जातक का बचपन, जलीय पदार्थ, सुगन्ध, मासिक धर्म (स्त्रियोंमें चरित्र भी), आलस्य, कफ,

सर्दी, दया, कोमलता, रसिकता, औषधि, रसीली वस्तुओंका व्यापार, दूध डेयरी, कद, रक्तशुद्धता, गर्भ, बाईं आंख, प्रदर, कल्पना, कला, संगीत आदि को कुण्डलीमें चन्द्रमाकी स्थिति से विचारा जाता है। रोग ज्योतिषके अनुसार निमोनिया, सर्दी, जुकाम, श्वास रोग, टी. बी., प्रदर रोग, दौरे, मिरगी, मनोरोग, विभ्रम, डिप्रेशन, दूषितरक्त, प्रमेह, पाण्डुरोग, चिंता, यौन रोग, जल, फेफड़े, छाती, स्मरणशक्ति आदि का विचार भी चन्द्रमा की स्थिति से किया जाता है। निर्बल व पापग्रहोंसे घिरा या देखा जाता चन्द्रमा मनुष्य को पापकर्मोंके लिये प्रेरित करते हैं। जातक का जन्म पूर्णिमा की रात्रि को हो तो एक करोड़ दोष को चन्द्रदेव नष्ट कर देते हैं। अतः चन्द्रमा का कुण्डलीमें विशेष स्थान होता है।

प्रत्येक सोमवार एवं पूर्णिमा के दिन चांदी के चन्द्रमा तथा खीर देवमन्दिरमें अर्पित करने से चन्द्रदेव प्रसन्न होते हैं, मानसिक दोष समाप्त होते हैं, यशकीर्ति तथा धन–धान्य का लाभ होता है।

प्रत्येक पूर्णिमा को रात्रिकालमें चन्द्रमाको अर्घ्य प्रदान करते हुए 16 दीपक प्रज्जवलित कर किसी ऊंचे स्थान पर चन्द्रमाको अर्पित करनेसे कई प्रकार के लाभ होते हैं।

GURUDEV RAJ VERMA
9897507933
7500292413

कुण्डलीमें चन्द्रमा दोष हो तो चांदीके पूर्ण चन्द्रमा बनवाकर उनका प्रत्येक सोमवार को दूध जलादि सुगन्धित द्रव्योंसे स्नान करवाकर चन्द्रमा मंत्र की 21 माला अवश्य करनी चाहिये। रात्रिकालमें पूजा उत्तम है।

सोमवार को चन्द्रमाके नाम से कुछ न कुछ दान अवश्य करना चाहिये। इस दिन किसी का अन्न धन ग्रहण न करे।

नवोदित चन्द्र को अर्घ्य देने की विधि– श्रीकृष्णने कहा– प्रतिमास शुक्ल पक्षकी द्वितीयाको प्रदोषकालके समय भूमिपर गोबर का एक मण्डल बनाकर उसमें रोहिणी सहित चन्द्रमाकी प्रतिमाको स्थापित करके श्वेत चन्दन, श्वेत पुष्प, अक्षत, धूप, दीपक, अनेक प्रकारके फल, नैवेद्य, दही, श्वेत वस्त्र आदिसे उनका पूजन करे और इस मंत्रसे चन्द्रमाको अर्घ्य प्रदान करे– 'नवो नवोऽसि मासान्ते जायमानः पुनः पुनः। आप्यायस्व स मे त्वेवं सोमराज नमो नमः।।' जो व्यक्ति इस विधिसे चन्द्रमाको प्रतिमास अर्घ्य देता है, उसे पुत्र, पौत्र, धन, पशु, आरोग्य आदि की प्राप्ति होती है तथा सौ वर्ष तक सुख भोगकर अंतमें वह चन्द्रलोकको और फिर मोक्ष को प्राप्त करता है।

GURUDEV RAJ VERMA
9897507933
7500292413

एकाक्षर मंत्र– 'सौं।' इस मंत्र के ऋषि भार्गव, छन्द पंक्ति तथा देवता चन्द्रमा हैं।

षडंगन्यास– आं सौं हृदयाय नमः। ईं सौं शिरसे स्वाहा। ऊं सौं शिखायै वषट्। ऐं सौं कवचाय हुं। औं सौं नेत्रत्रयाय वौषट्। अः सौं अस्त्राय फट्।

ध्यान– श्वेताब्जं संस्थं रजकान्ति हारविराजितम्। नीलकेशं च कुमुदं वामे दक्षकरे वरम्। दधानं भावयेद्देवं मृगांकं मणि मौलिकम्।।

षडक्षर मंत्र– 'ॐ स्वौं सोमाय नमः।'

षडंगन्यास– स्वां, स्वीं, स्वूं, स्वैं, स्वौं, स्वः।

ध्यान– कर्पूरस्फटिकावदातमनिशं पूर्णेन्दूबिंबाननं, मुक्तादामविभूषितेन वपुषा निर्मूलयन्तं तमः। हस्ताभ्यां कुमुदं वरं विदधतं नीलालकोद्भासितं स्वस्यांकस्थ मृगोदिताश्रयगुणं सोमं सुधाब्धिं भजे।।

रात्रिकालमें मस्तकमें मंत्र का ध्यान करने से रोग तथा कष्ट समाप्त होते हैं। दीर्घायु एवं धनैश्वर्य का लाभ होता है। विशेष संकट में मंत्र को विधिवत् सिद्ध करना चाहिये। स्फटिक अथवा चांदी की प्राणप्रतिष्ठित माला से जप करना चाहिये।

GURUDEV RAJ VERMA
9897507933
7500292413

दशाक्षर मंत्र– 'ॐ श्रीं श्रीं श्रूं सों सोमाय नमः।

इसके ऋष्यादि एवं ध्यान पूर्ववत् हैं। लक्ष्मी प्राप्तिके लिये यह मंत्र विशेष लाभकारी है।

चन्द्रमा गायत्री– ॐ अमृतांगाय विद्महे कलारूपाय धीमहि तन्नः सोमः प्रचोदयात्।

श्रीचन्द्र कवचम्– विनियोग– ॐ अस्य श्रीचन्द्र कवचस्य गौतम ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीचन्द्रो देवता, श्रीचन्द्र प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास– गौतम ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। श्री चन्द्र देवतायै नमः हृदि। श्रीचन्द्र प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

ध्यान– समं चतुर्भुजं वन्दे केयूर मुकुटोज्ज्वलम्। वासुदेवस्य नयनं शंकरस्य च भूषणम्।।

GURUDEV RAJ VERMA
9897507933
7500292413

कवच पाठ– शशी पातु शिरोदेशं भालं पातु कलानिधिः। चक्षुषी चन्द्रमा पातु श्रुती पातु निशापतिः।।

प्राणं क्षपाकरं पातु मुखं कुमुदबान्धवः। पातु कण्ठं च मे सोमः स्कन्धौ जैवातृकस्तथा।।

करौ सुधाकरः पातु वक्षः पातु निशाकरः। हृदयं पातु मे चन्द्रो नाभिं शंकरभूषणः।।

मध्यं पातु सुरश्रेष्ठः कटिं पातु मधुकरः। ऊरु तारापतिः पातु मृगांको जानुनी सदा।।

अब्धिजः पातु मे जंघे पातु पादौ विधुः सदा। सर्वाण्यन्यानि चांगानि पातु चन्द्रोऽखिलं वपुः।।

एतद्धि कवचं दिव्यं भुक्ति मुक्ति प्रदायकम्। यः पठेच्छृणुयाद् वापि सर्वत्र विजयी भवेत्।।

GURUDEV RAJ VERMA
9897507933
7500292413

श्रीचन्द्राष्टविंशति नाम स्तोत्रम्– विनियोगः– ॐ अस्य श्रीचन्द्राष्ट विंशति नाम स्तोत्रस्य गौतम ऋषिः, विराट् छन्दः, श्रीचन्द्रो देवता, श्रीचन्द्र प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास– श्रीगौतम ऋषये नमः शिरसि। विराट् छन्दसे नमः मुखे। श्रीचन्द्रो देवतायै नमः हृदि। श्रीचन्द्र प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

नामावलि स्तोत्रम्– सुधाकरश्च सोमश्च ग्लौरब्जः कुमुदप्रियः। लोकप्रियः शुभ्रभानुश्चन्द्रमा रोहिणीपतिः।।

शशी हिमकरो राजा द्विजराजो निशाकरः। आत्रेयः इन्दुः शीतांशुरौषधीशः कलानिधिः।।

जैवातृको रमाभ्राता क्षीरोदार्णव सम्भवः। नक्षत्रनायकः शम्भु शिरश्चूडामणिर्विभुः।।

तापहर्ता नभोदीपो नामान्येतानि यः पठेत्। प्रत्यहं भक्ति संयुक्तस्तस्य पीड़ा विनश्यति। तद्दिने च पठेद्यस्तु लभेत् सर्वं समीहितम्। ग्रहादीनां च सर्वेषां भवेच्चन्द्रबलं सदा।।

GURUDEV RAJ VERMA
9897507933
7500292413

इन्द्र द्वारा चन्द्रमा की स्तुति– आपका पराक्रम अनुपम है। आप ग्रह नक्षत्रोंके अधिपतियोंके भी अधिपति हैं। सब प्राणियोंमें जो रस है, वह आपका ही है। समुद्रके समान आपके मण्डलकी क्षय वृद्धि सदा अव्यक्त रहती है। आप संसारमें कालको प्रवर्तित करते हुए दिन और रात्रिका परिवर्तन करते रहते हैं। सोम! आपके मण्डलके मध्यमें पृथ्वालोककी छाया ही शश नामक चिह्न है। नक्षत्रोंका विचार करने वाले विद्वान् और चन्द्रोपासक भी आपको वास्तविक रूपमें नहीं जान सकते। आप आदित्यपथसे भी ऊर्ध्वदेशमें और सम्पूर्ण ज्योतिर्मण्डलोंके भी ऊपर स्थित रहते हैं। आप अपने तेजोमय शरीरके द्वारा अंधकारको दूर कर समस्त संसारको प्रकाशित करते हैं। आपकी किरणें श्वेतवर्ण की हैं। आपका शरीर हिममय है। आप नक्षत्रोंके स्वामी, शशके चिह्नसे युक्त, संवत्सररूप कालके रचियता, कालयोगस्वरूप, पूजनीय, वर्षा आदिके रूपमें यज्ञके रस और अव्यय प्रवाहरूपसे नित्य हैं। आप अन्नादि ओषधियोंके स्वामी, क्रियाओं और जलके उत्पत्तिस्थान तथा स्वभावसे ही शीतलता धारण करने वाले हैं। आपकी किरणें शीतल हैं। आप अमृतके आधार हैं, चपल हैं। आपका वाहन श्वेतवर्ण का है। आप ही कान्तिमान् शरीरवाले नर–नारियों और देवताओंकी कान्ति हैं और सोमसे जीविका चलाने वाले देवसमूहके लिये आप की सोम हैं। आप सभी प्राणियोंके लिये सौम्य हैं, अंधकार का नाश करने वाले हैं तथा नक्षत्रोंके राजा हैं।

श्रीचन्द्र अष्टोत्तरशत नामावलि– ॐ सौं श्रीमते नमः। ॐ सौं शशधराय नमः। ॐ सौं चन्द्राय नमः। ॐ सौं ताराधीशाय नमः। ॐ सौं निशाकराय नमः। ॐ सौं सुधानिधये नमः। ॐ सौं सदाऽराध्याय नमः। ॐ सौं सत्पतये नमः। ॐ सौं साधुपूजिताय नमः। ॐ सौं जितेन्द्रियाय नमः। ॐ सौं जयोद्योगाय नमः। ॐ सौं ज्योतिश्चक्रप्रवर्तकाय नमः। ॐ सौं विकर्तनानुजाय नमः। ॐ सौं वीराय नमः। ॐ सौं विश्वेशाय नमः। ॐ सौं विदुषां पतये नमः। ॐ सौं दोषाकराय नमः। ॐ सौं दुष्टदूराय नमः। ॐ सौं पुष्टिमते नमः। ॐ सौं शिष्टपालकाय नमः। ॐ सौं अष्टमूर्तिप्रियाय नमः। ॐ सौं अनन्ताय नमः। ॐ सौं कष्टदारुकुठाराय नमः। ॐ सौं स्वप्रकाशाय नमः। ॐ सौं प्रकाशत्मने नमः। ॐ सौं द्युचराय नमः। ॐ सौं देवभोजनाय नमः। ॐ कलाधराय नमः। ॐ सौं कालहेतवे नमः। ॐ सौं कामकृते नमः। ॐ सौं कामदायकाय नमः। ॐ सौं मृत्युसंहारकाय नमः। ॐ सौं अमर्त्याय नमः। ॐ सौं नित्यानुष्ठानदाय नमः। ॐ सौं क्षपाकाराय नमः। ॐ सौं क्षीणपापाय नमः। ॐ सौं क्षयवृद्धिसमन्विताय नमः। ॐ सौं जैवातृकाय नमः। ॐ सौं शुचये नमः। ॐ सौं शुभ्राय नमः।

GURUDEV RAJ VERMA
9897507933
7500292413

ॐ सौं जयिने नमः। ॐ सौं जयफलप्रदाय नमः। ॐ सौं सुधामयाय नमः। ॐ सौं सुरस्वामिने नमः। ॐ सौं भुक्तिदाय नमः। ॐ सौं भद्राय नमः। ॐ सौं भक्नामिष्टदायकाय नमः। ॐ सौं भक्तदरिद्रभंजनाय नमः। ॐ सौं सामगानप्रियाय नमः। ॐ सौं सर्वरक्षकाय नमः। ॐ सौं सागरोद्भवाय नमः। ॐ सौं भयान्तकृते नमः। ॐ सौं भवितगम्याय नमः। ॐ सौं भवबन्धविमोचकाय नमः। ॐ सौं जगत्प्रकाशकरणाय नमः। ॐ सौं जगदानन्दकारणाय नमः। ॐ सौं निःसपत्नाय नमः। ॐ सौं निराहाराय नमः। ॐ सौं निर्विकाराय नमः। ॐ सौं निरामयाय नमः। ॐ सौं भूछायाच्छादिताय नमः। ॐ सौं भव्याय नमः। ॐ सौं भुवनप्रतिपालकाय नमः। ॐ सौं सकलार्तिहराय नमः। ॐ सौं सौम्यजनकाय नमः। ॐ सौं साधुवन्दिताय नमः। ॐ सौं सर्वागमज्ञाय नमः। ॐ सौं सर्वज्ञाय नमः। ॐ सौं सनकादिमुनिस्तुताय नमः। ॐ सौं सितछत्रध्वजोपेताय नमः। ॐ सौं सितांगाय नमः। ॐ सौं श्वेतमाल्याम्बर धराय नमः। ॐ सौं सितभूषणाय नमः। ॐ सौं श्वेतगंधानुलेपनाय नमः। ॐ सौं दशाश्वरसंरुढाय नमः। ॐ सौं दण्डपाणये नमः। ॐ सौं धनुर्धराय नमः। ॐ सौं कुन्दपुष्पोज्जवलाकाराय नमः। ॐ सौं नयनाब्ज समुद्भवाय नमः। ॐ सौं आत्रेयगोत्रजाय नमः। ॐ सौं अत्यन्तविनयाय नमः। ॐ सौं प्रियदायकाय नमः। ॐ सौं करुणारस सम्पूर्णाय नमः। ॐ सौं कर्कटक

प्रभवे नमः। ॐ सौं चतुरस्र समारुढाय नमः। ॐ सौं अव्याय नमः। ॐ सौं चतुराय नमः। ॐ सौं दिव्यवाहनाय नमः। ॐ सौं विवस्वन्मण्डला ज्ञेयवासाय नमः। ॐ सौं वसुसमृद्धिदाय नमः। ॐ सौं महेश्वरप्रियाय नमः। ॐ सौं दान्ताय नमः। ॐ सौं मेरुगोत्र प्रदक्षिणाय नमः। ॐ सौं ग्रहमण्डल मध्यस्थाय नमः। ॐ सौं ग्रसितार्काय नमः। ॐ सौं द्विजराजाय नमः। ॐ सौं द्युतितकाय नमः। ॐ सौं द्विभुजाय नमः। ॐ सौं द्विजपूजिताय नमः। ॐ सौं औदुम्बर नगावासाय नमः। ॐ सौं उदाराय नमः। ॐ सौं रोहिणीपतये नमः। ॐ सौं नित्योदयाय नमः। ॐ सौं मुनिस्तुताय नमः। ॐ सौं नित्यनन्द फलप्रदाय नमः। ॐ सौं सकला ह्लादनकराय नमः। ॐ सौं पलाशसमिधप्रियाय नमः। ॐ सौं चन्द्रमसे नमः।

श्रीचन्द्रमा उत्पत्ति कथा– वैशम्पायनजीने कहा– प्राचीनकालमें ब्रह्माजी ने प्रजाकी सृष्टि करनेका विचार किया। उस समय उनके मानसिक संकल्पसे चन्द्रमा के पिता भगवान् अत्रि ऋषि उत्पन्न हुए। अत्रि ऋषिभी प्रजाकी सृष्टिमें ही सलंग्न हुए। वे तथा उनके पुत्र मन, वाणी और कर्मसे सब प्राणियोंका कल्याण करने वाले कार्य ही करते थे। प्राचीन् कालमें प्रशंसनीय व्रतका

पालन करने वाले, महातेजवी, धर्मात्मा अत्रि ऋषिने तीन हजार दिव्य वर्षोंतक अपनी भुजाएं ऊपर उठाकर दीवार और पत्थरके समान निश्चल रहकर किसी प्राणीको तनिक भी कष्ट न पहुंचाये घोर तप किया। अत्रि ऋषि महान् सत्वगुणसे सम्पन्न थे। वे एकटक देखते हुए ब्रह्मचारी रहकर सोमकी भावनासे खड़े–खड़े तपस्या करते थे, अतः उनका शरीर सोमरूपमें परिणत हो गया। शुद्ध अंतः करण वाले मुनिके नेत्रोंसे वह सोमरूप तेज, जलरूपमें बह निकला और दसों दिशाओंको प्रकाशित करता हुआ आकाशमें चढ़ने लगा। तब प्रसन्नतामें भरी हुई दस दिशारूपी देवियोंने सम्मिलित हो उस तेजको अपने गर्भमें विधिपूर्वक धारण किया, परंतु वे उस तेजको धारण करनेमें समर्थ न हो सकीं। तब औषध आदिके द्वारा सब लोकोंको पुष्ट करने वाला शीतल किरणोंसे सुशोभित वह प्रकाशमान गर्भ लोकोंको प्रकाशित करता हुआ दिग्देवियोंके उदरसे सहसा गिर पड़ा। जब दिशाएं उस गर्भके तेजको न रोक सकीं तो वह गर्भ उनके साथ ही पृथ्वी पर गिर पड़ा। सोमको गिरा हुआ देख ब्रह्माजीने संसारका हित करनेकी भावनासे उसे रथ पर रख लिया। वह रथ वेदमय, धर्मस्वरूप तथा सत्यसे नियंत्रित था। उसमें एक हजार श्वेत घोड़े जुते हुए थे।

अत्रिपुत्र भगवान् सोमके गिरने पर ब्रह्माजीके सुप्रसिद्ध सात मानस पुत्र उनकी स्तुति करने लगे। भृगु ऋषि और उनके पुत्र ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद

और अथर्ववेदकी अनेक श्रुतियोंसे सोमकी स्तुति करने लगे। स्तुति करने पर पुष्ट हुआ प्रकाशमान सोमका तेज तीनों लोकोंको सर्वथा प्रकाशित करने लगा। तब ब्रह्माजी ने उस सोमवान श्रेष्ठ रथमें बैठकर समुद्रतक की पृथ्वीकी 21 बार प्रदक्षिणा की। उस समय रथके वेगसे छलककर सोमका जो तेज पृथ्वी पर टपकने लगा, उस तेजसे प्रकाशपूर्ण ओषधियां उत्पन्न हुईं। उन ओषधियोंसे भूलोक, भुवर्लोक और स्वर्गलोक– इन तीनों लोकोंका और जरायुज, अण्डज, स्वदेज तथा उद्भिज– इन चार प्रकारकी प्रजाओंका पालन होता रहता है। इस प्रकार भगवान् सोम सम्पूर्ण जगत् का पोषण करते हैं। उन स्तुतिरूप कर्मोंसे तेजस्वी होकर भगवान् सोमने एक हजार पद्म वर्षोंतक तप किया। चांदीके समान शुक्ल वर्णवाली जो जलकी अधिष्ठात्री देवियां अपने स्वरूप भूत जलसे जगत् का पालन करती हैं, चन्द्रदेव उनकी निधि हुए। वे अपने कर्मोंसे विख्यात हैं। तदनन्तर ब्रह्माजीने चन्द्रमाको बीज, ओषधि, ब्राह्मण और जलका राजा बना दिया। जब प्रकाशवानोंमें श्रेष्ठ चन्द्रमाका इन चारोंके राज्य पर सम्राट्के रूपमें अभिषेक हो गया, तब सम्राट चन्द्रमा अपनी कान्तिसे तीनों लोकोंको प्रकाशित करने लगे। उस समय प्रचेताओंके पुत्र दक्षने अपनी महाव्रतधारिणी 27 कन्याएं चन्द्रमाको ब्याह दीं, जिन्हें विद्वान पुरुष 27 नक्षत्रोंके रूपमें जानते हैं। इस बड़े भारी राज्यको पाकर पितरदेवताओंमें श्रेष्ठ सोमने राजसूय यज्ञका अनुष्ठान किया, जिसमें

उन्होंने एक लाख गौएं दक्षिणामें दी थीं। सोमके उस यज्ञमें भगवान् अत्रि होता बने। भगवान् भृगु अध्वर्यु, हिरण्यगर्भ उद्गाता तथा वसिष्ठजी ब्रह्मा बने। उस यज्ञमें सनत्कुमार आदि प्राचीन ब्रह्मऋषियोंने स्वयं भगवान् नारायण हरिको ही सदस्य बनाया था। उन ब्रह्मर्षियोंमें श्रेष्ठ सदस्योंको सोमने तीनों लोक दक्षिणामें दे दिये थे।

उस समय सिनीवाली, कुहू, द्युति, पुष्टि, प्रभा, वसु, कीर्ति, धृति और शोभा– ये नौ देवियां नित्यप्रति चन्द्रमाकी सेवामें लगी रहती थीं। इस प्रकार सभी ऋषि और देवताओंसे सत्कार पाकर द्विजराज चन्द्रमाने अवभृथ स्नान किया, फिर वे दसों दिशाओंको प्रकाशित करने लगे। मुनियों द्वारा सम्मानित उस दुर्लभ ऐश्वर्यको पाकर चन्द्रमाकी बुद्धि विनयसे भ्रष्ट हो गयी और उन्हें अनीतिने धर दबाया। तब उन्होंने अंगिराके सब पुत्रोंका तिरस्कार करके बृहस्पतिजी की यशस्विनी पत्नी ताराका बलपूर्वक अपहरण कर लिया। देवताओं तथा देवर्षियों के याचना करने पर भी उन्होंने बृहस्पतिजीकी स्त्री उनको नहीं लौटायी। तब तो देवताओंके आचार्य गुरु बृहस्पतिजी उनके ऊपर अत्यन्त कुपित हो उठे। उस समय शुक्राचार्य ने चन्द्रमाका पक्ष लिया और रुद्रने बृहस्पतिका। क्योंकि महातेजस्वी रुद्र बृहस्पतिके पिता अंगिराके शिष्य थे। उसी गुरु भाईके स्नेहसे भगवान् शिव अपना आजगव नामक धनुष लेकर बृहस्पतिजी के सहायक बने थे। महात्मा रुद्रने दैत्योंको लक्ष्य करके

ब्रह्मशिर नामक श्रेष्ठ अस्त्र छोड़ा, जिसने उन दैत्योंके सारे यशपर ही पानी फेर दिया। वहां ताराके लिये देवताओं और दानवोंमें बड़ा भारी युद्ध हुआ, जो तारकामय महासंग्रामके नामसे प्रसिद्ध है। इसमें संसारका बड़ा भारी संहार हुआ। इस युद्धमें मरने से बचे हुए देवता और तुषितगण ब्रह्माजी की शरणमें गये। तब ब्रह्माजीने शुक्राचार्य तथा रुद्रोंमें ज्येष्ठ शंकरजी को भी समझाकर युद्ध करनेसे रोका, फिर उन्होंने स्वयं ही ताराको लाकर बृहस्पतिजी को दे दिया। उस समय ताराको गर्भवती देख बृहस्पतिजीने कहा– तुझे मेरे क्षेत्रमें किसी तरह पराया गर्भ नहीं धारण करना चाहिये। तब ताराने अयोग्य स्थान– सींकोंके झुरमुटमें जाकर प्रज्वलित अग्निके समान तेजस्वी उस भारी दस्युहन्ता कुमारको उत्पन्न किया। उसे ऐश्वर्यवान् कुमारने उत्पन्न होते ही अपने शरीरकी कांतिसे देवताओंका तेज फीका कर दिया। तब तो देवता संदेहमें पड़कर तारासे कहने लगे– सच बताओ। यह पुत्र चन्द्रमा का है अथवा बृहस्पतिका? परंतु देवताओंके पूछने पर भी जब उसने कुछ भी उत्तर न दिया, तब वह सुकुमार उसे शाप देनेके लिये तैयार हो गया। उस समय ब्रह्माजीने उसे रोककर तारा से कहा– तारे! यह किसका पुत्र है, ठीक ठीक बताओ। तब उसने दोनों हाथ जोड़कर ब्रह्माजी से कहा– प्रभु! यह सोमका ही पुत्र है। तब उस गर्भको धारण कराने वाले प्रजापति चन्द्रमाने उस महामना दस्युहन्ता कुमारका मस्तक सूंघकर उस बुद्धिमान पुत्र

का नाम बुध रखा। यह बुध जब आकाशमें उदय होता है, तब उत्पात किया करता है। तदनन्तर वैराज मनुकी पुत्री इलाने बुधसे एक पुत्र उत्पन्न किया। उनके वे पुत्र महाराज पुरूरवा हुए। महात्मा पुरूरवाके द्वारा उर्वशीके गर्भसे सात पुत्र उत्पन्न हुए। इधर सोम को हठात् राजयक्ष्माने धर दबाया। राजयक्ष्मासे ग्रस्त होने पर चन्द्रमाका मण्डल क्षीण होने लगा, तब वे अपने पिता अत्रिकी शरणमें पहुंचे। महापतस्वी अत्रिने उनके तापको दूर कर दिया। वे चन्द्रमा राजयक्ष्मा रोगसे मुक्त होकर सब ओर से प्रकाशित हो उठे। इस प्रकार मैंने तुमसे चन्द्रमाके जन्मका वर्णन किया है, जो कीर्तिको बढ़ाने वाला है। मनुष्य चन्द्रमाके जन्मको सुनते ही सब पापोंसे मुक्त हो जाता है। यह चन्द्रमाके जन्मकी कथा धन, आयु, आरोग्य और पुण्य देने वाली है। इसे सुननेसे मनुष्यके सारे संकल्प और मनोरथ सिद्ध हो जाते हैं।(श्रीहरिवंशपुराणे)

Gurudev Raj Verma

Mob- +91-9897507933

WhatsApp- +91-7500292413

Website- mahakalshakti.wordpress.com

Website- www.scribd.com/mahakalshakti

Email- mahakalshakti@gmail.com

GURUDEV RAJ VERMA
9897507933
7500292413